Vol.8 January 2015 No.6
Annual Subscription : Rs 100
Rs. 10/- per copy

ब्रह्मार्पण

BRAHMARPAN

वेदोऽखिलो धर्ममूलम्

A Monthly publication of Brahmasha India Vedic Research Foundation

Brahmasha India Vedic Research Foundation

ब्रह्माशा इंडिया वैदिक रिसर्च फाउन्डेशन

नववर्ष की हार्दिक
शुभकामनाएं

तेरा वन्दन 'भारत माता

-डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी

मनुज सभ्यता की य ा गाथा
जिसको भारत रहा सजाता
जहाँ चित्त भय ून्य, निरामय दष्टि,
गर्व से उन्नत माथा,
उस माथे पर तिलक लगाता
अपने हाथों स्वयं विधाता,
रि मरथी स्वर्णिम किरणों को,
हिमकिरीट जिसको पहनाता,
चरणों को पखार कर सागर
हिन्द महासागर कहलाता,
पर्वत, निर्झर, नदियाँ
तेरा वंदन करते भारत माता।

नींव का हाहाकार

-रामधारीसिंह 'दिनकर'

काँपती है वज्र की दीवार।
नींव में से आ रहा है क्षीण हाहाकार।
जानते हो, कौन नीचे दब गया है?
दर्द की आवाज पहले भी सुनी थी
या कि यह दुष्काण्ड बिल्कुल ही नया है?
वस्त्र जब नूतन बदलते हो किसी दिन,
खून के छींटे पड़े भी देखते हो?
रात को सूनी, सुनहरी कोठरी में
मौन कुछ मुर्दे खड़े भी देखते हो?
रोटियों पर कौर लेते ही कहीं से
अश्रु की भी बूँद क्या चूती कभी है?
बाग में जब घूमते हो ाम को तब
सनसनाती चीज भी छूती कभी है?
जानते हो, यह अनोखा राज क्या है?
वज्र की दीवार यह क्यों काँपती है?
और गूँगी ईंट की आवाज क्या है?
तोड़ दो इसको, महल को पस्त और
बर्बाद कर दो।
नींव की ईंटें हटाओ।
दब गए हैं जो, अभी तक जी रहे हैं।
जीवितों को इस महल के
बोझ से आजाद कर दो।
तोड़ना है पुण्य तो तोड़ो खु ाी से।
जोड़ने का मोह जी का काल होगा।
अनसुनी करते रहे इस वेदना को,
एक दिन ऐसा अचानक हाल होगाः-
वज्र की दीवार यह फट जाएगी।
लपलपाती आग या सात्विक
प्रलय का रूप धरकर
नींव की आवाज बाहर आएगी।
वज्र की दीवार जब भी टूटती है,
नींव की यह वेदना
विकराल बनकर छूटती है।
दौड़ता है दर्द की तलवार बनकर
पत्थरों के पेट से नरसिंह ले अवतार।
काँपती है वज्र की दीवार।

-'नील कुसुम' पुस्तक से साभार

BRAHMASHA INDIA VEDIC RESEARCH FOUNDATION

C2A/58, Janakpuri,
New Delhi-110058
Tel :- 25525128, 9313749812
*email:*deeukhal@yahoo.co.uk
brahmasha@gmail.com
Website : www.thearyasamaj.org
of Delhi Arya Pratinidhi Sabha

Sh. B.D. Ukhul
Secretary
Dr. B.B. Vidyalankar
President
Col.(Dr.) Dalmir Singh (Retd.)
V.President
Dr. Mahendra Gupta *V.President*
Ms. Deepti Malhotra
Treasurer
Editorial Board
Dr. Bharat Bhushan Vidyalankar, Editor
Dr. Harish Chandra
Dr. Mahendra Gupta
Acharya Gyaneshwararya

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्याय क्षेत्र दिल्ली ही होगा।

Printed & Published by
B.D. Ukhul for Brahmasha India Vedic Research Foundation
Under D.C.P.
License No. F2 (B-39) Press/ 2007
R.N.I. Reg. No. DELBIL/ 2007/22062
Price : Rs. 10.00 per copy
Annual Subscription : Rs. 100.00

Brahmarpan January 2015 Vol. 8 No.6
पौष–माघ 2070 वि.संवत्

ब्रह्मार्पण
BRAHMARPAN

A bilingual Publication of Brahmasha India Vedic Research Foundation

CONTENTS

1. तेरा वन्दन 'भारत माता' 2
–डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी
2. नींव की हाहाकार 2
–रामधारी सिंह 'दिनकर'
3. संपादकीय 4
4. सांख्य द र्ान 7
–डॉ. भारत भूषण
5. ब्रह्म विद्या के प्रतीक– (सुख के सागर चारों वेद) 8
–आचार्य भगवानदेव वेदालंकार
6. मकर संक्रान्ति : सूर्य के स्वागत का पर्व 13
–डॉ. मधु पोद्दार
7. स्वाधीनता संग्राम के पुरोधा लाला लाजपतराय 17
–प्रो. लालमोहर उपाध्याय
8. धर्मवीर हकीकतराय का बलिदान 19
–गुरुदत्त
9. जब आज़ाद हिन्द फौज ने प्रथम गोली दागी 22
(23 जनवरी को नेताजी की जयन्ती पर)
10. 'भारतमाता के सम्मान के रक्षक ाहीद ऊधमसिंह' 27
–मनमोहन कुमार आर्य
11. No One Dies 31
-Jaya Row
12. International Arya Mahasammelan 2014 (Singapore) 1st-2nd Nov. 2014
-B. D. Ukhul 33

संपादकीय

दे ा में रामपाल जैसे संतों और डेरों का मायाजाल

भारतीय समाज में जिन संतों और महात्माओं से समाज का मार्गद ॅन करने की अपेक्षा की जाती है आज वे ही भ्रष्ट हो गए हैं और समाज के अधःपतन का कारण बन गए हैं। इन तथा-कथित सन्तों में बाबा रामपाल, आ ाराम बापू, उनका पुत्र नारायण, स्वामी नित्यानन्द, आदि प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त हरियाणा और पंजाब में बहुत-से डेरों में हिन्दू, सिख और समाज में कमजोर वर्गों के लोग बड़ी संख्या में पहुँचते हैं। ऐसा ही डेरा रामपाल का सतलोक आश्रम है। लोग यहाँ आध्यात्मिकता की चाह लेकर आते हैं। यहाँ आध्यामिकता के नाम पर पाखंड, अंधवि वास और गुंडागर्दी का साम्राज्य मिलता है। सन् 2006 में आर्यसमाज द्वारा इसका विरोध करने पर रामपाल ने आश्रम के आसपास के गाँवों के भक्तों की सहायता से आर्यसमाज और स्वामी दयानन्द जी के सत्यार्थप्रका ा के विरुद्ध मिथ्या प्रचार किया और आचार्य बलदेव जी व अन्य आर्य सार्वदे ाक सभा के सदस्यों पर हमला किया जिसमें सोनू नामक युवक आर्यसभासद ाहीद हो गया। फलस्वरूप प्र ाासन द्वारा सतलोक आश्रम सील कर दिया गया और रामपाल को गिरफ्तार कर लिया गया। बाद में रामपाल के अनुरोध पर आसपास के गाँवों के विरोध के बावजूद उच्चतम न्यायालय द्वारा आश्रम रामपाल को सौंप दिया गया।

रामपाल स्वयं को पूर्णब्रह्म, कबीर का भक्त और अवतार कहता है। कबीर का जीवन त्यागपूर्ण और साधनामय था। मालूम नहीं रामपाल ने कबीर को कितना जाना-समझा है। कबीर ने फकीरी में स्वयं को सारे बंधनों से मुक्त कर लिया था। संसार में रहकर भी वह सांसारिक झंझटों से दूर रहा। परन्तु आज के रामपाल जैसे संत धर्म के नाम पर काला धंधा व ऐया ाी कर रहे हैं। रामपाल ने गाँव की 15-16 एकड़ जमीन पर कब्जा करके आश्रम के नाम से किला खड़ा कर

लिया है, जहाँ हर तरह का अनाचार, भ्रष्टाचार, व्यभिचार उनकी दिनचर्या का हिस्सा बन गया है। रामपाल जैसे लोग आज समाज में अपना दबदबा बनाने, धन कमाने, मौजमस्ती करने के लिए संत बनने का ढोंग कर रहे हैं। ये कैसा सन्त है जिसने अपने आश्रम में पैट्रोल बम, हजारों लाठियाँ और आधुनिक हथियार जमा कर रखे हैं। जब पुलिस रामपाल को गिरफ्तार करने आई तो हजारों समर्थकों/भक्तों ने पुलिस बल पर ही हमला कर दिया। उस समय उसके आश्रम में उसके चालीस-पचास हजार भक्त थे। सैकड़ों स ास्त्र कमांडों भी तैनात थे। वे पुलिस से ही भिड़ गए। रामपाल को गिरफ्तार करने के लिए हरियाणा, पंजाब की सरकारों को 27 करोड़ रुपय व्यय करने पड़े। न्यायालय का आदे ा है कि रामपाल की गिरफ्तारी के लिए राज्यों को जितनी भी रा ि खर्च करनी पड़ी है उसे रामपाल से वसूला जाए। रामपाल के इन राष्ट्रविरोधी कार्यों के कारण उसके विरुद्ध राष्ट्रद्रोह का मुकद्दमा भी दर्ज किया जाए।

रामपाल को गिरफ्तार करने के बाद आश्रम की तला ी में जो सामान मिला वह आँखें खोलने वाला है। वहाँ पुलिस के विरुद्ध कार्रवाई के लिए जहाँ लाठियाँ और हथियार मिले वहीं बहुत-सी बाल्टियों में तेजाब भरा पड़ा था, बोरियों में पत्थर और लोहे के टुकड़े भरे हुए थे। कमांडों की 50-60 वर्दियाँ भी मिलीं। उसके कमरों में सभी प्रकार का ऐ ोआराम का सामान था। आ चर्य होता है कि एक सन्त के ायनकक्ष में प्रेग्नेसी टेस्ट किट का क्या काम? वह जब प्रवचन करता था तो बुलेट प्रूफ जैकेट पहन कर बैठता था। न जाने उसे किससे खतरा था। क्या उसे अपने भक्तों से डर था? बड़े आ चर्य की बात है कि वह दूध से स्नान कर उस दूषित दूध की खीर बनवाकर भक्तों को प्रसाद के रूप में वितरित करता था। रामपाल ने धन कमाने का एक अजब तरीका अपना रखा था। उसके एजेंट विभिन्न प्रदे ों में जाकर भक्त बनाते थे और उन्हें कहते थे कि आप आश्रम में संत रामपाल का प्रवचन सुनने आइए। पहली बार आप उनका प्रवचन मुफ्त में सुन सकेंगे। उसके बाद दुबारा आने पर सन्त जी को 1000रु.

दक्षिणा में देने होंगे। इस प्रकार वह भक्तों को लूटता था। इसके लिए एजेंटों को कमी ान मिलता था।

हरियाणा और पंजाब उच्च न्यायालय ने रामपाल को कोर्ट में उपस्थित होने के लिए बहुत-से नोटिस भेजे परन्तु वह अदालत की अवहेलना करता रहा। इस कारण से उस पर न्यायालय की अवमानना के 43 मामले दर्ज हैं। उसे न्यायालय की अवमानना के लिए चंडीगढ उच्च न्यायालय द्वारा यथोचित सजा दी जाएगी।

आज समाज में आस्था के नाम पर अन्धवि वास बहुत अधिक बढ़ गया है। साधु-संतों ने धर्म को कमाई का साधन और व्यापार बना लिया है। धर्म की आड़ में वे भक्तों को मूर्ख बनाकर अपना उल्लू सीधा करते हैं। धर्म की आड़ में अनाचार और व्यभिचार का बोलबाला है। उत्तर भारत में वि ोषतः पंजाब-हरियाणा में गरीब, अनपढ़ लोग ऐसे डेरों की ारण में जाते हैं जहाँ उन्हें मुफ्त खाना मिलता है और वे सन्तों के भक्त बन जाते हैं। सन्त स्वयं को भगवान कहते हैं। ऐसे भगवान हर ाहर में पाँच-दस मिल जाएँगे। इस विषय में हमने अगस्त के अंक में "क्या िारड़ी के साईं बाबा भगवान हैं?' में विस्तार से विचार किया था।

ाास्त्रों में कहा भी है कि ऐसे पापी, दुराचारी लोग अधर्म का आचरण करके पहले तो खूब फलते-फूलते हैं, जीवन में सुख-समद्धि अर्जित करते हैं। वे अपने विरोधियों को परास्त देते लेते हैं इस सबके बावजूद अन्ततः उनका समूल ना ा हो जाता है। लोक है-

अधर्मेणेधते तावत् ततो भद्राणि प यति।
ततः सपत्नान् जयति समूलस्तु विन यति।।

आज हमारे समाज को धर्म के वास्तविक स्वरूप को समझने के लिए इन पाखंडी भगवानों से बचाना होगा। ये कुकरमुते की तरह सर्वत्र जाल बिछाए बैठे हैं। ये समाज को दिग्भ्रमित करके अपना धंधा चला रहे हैं। इसके लिए आव यक है कि हम विद्यालयों में धर्म िाक्षा और नैतिक िाक्षा पढ़ाएँ और बच्चों को वास्तविक भगवान् के स्वरूप को समझाने का प्रयास करें। अन्यथा ये लोग अन्धश्रद्धा और अंधवि वास के कुचक्र में फँसे रहेंगे।

संपादक

सांख्य द र्ान (अध्याय-1, सूत्र-84)

-डॉ. भारत भूषण विद्यालंकार

सांख्यद र्ान के सत्कार्यवाद के सिद्धान्त के अनुसार यदि कारण में कार्य का अस्तित्व है तो कार्य की उत्पत्ति कैसी? इस अवस्था में कार्य उत्पन्न हो रहा है या उत्पन्न होगा यह व्यवहार असंगत है। इस बात का स्पष्टीकरण सूत्रकार निम्नलिखित सूत्र में करते हैं, सूत्र हैं-

न भावे भावयोग चेत्।।84।।

अर्थ- (भावे) कारण में कार्य के होने पर (भावयोगः) कार्य की उत्पत्ति का योग (न) नहीं है (चेत्) यदि ऐसा कहो। भावार्थ- कारण में कार्य के अवस्थित होने पर उसका उत्पत्ति के साथ संबंध कहना ठीक नहीं है। जब कारण मे कार्य पहले ही विद्यमान है तो उसकी उत्पत्ति कैसी? किसी वस्तु के अविद्यमान रहने पर उसकी उत्पत्ति मानी जा सकती है। इसलिए सत्कार्य (कार्य की कारण में पूर्व विद्यामानता) के सिद्धान्त के अनुसार किसी कार्य की उत्पत्ति या विना ा का व्यवहार असंगत होगा। यदि कोई ऐसी आ ांका करे तो उसका समाधान सूत्रकार अगले सूत्र में करेंगे।

सी-2ए, 16/90 जनकपुरी,
नई दिल्ली-10058

कवि और चित्रकार में भेद हैं। कवि अपने स्वर में और चित्रकार अपनी रेखा में जीवन के तत्व और सौंदर्य का रंग भरता है। *-डॉ. रामकुमार वर्मा*

कष्ट और विपत्ति मनुष्य को ि ाक्षा देने वाले श्रेष्ठ गुण हैं, वे विजयी होते हैं। *-लोकमान्य तिलक*

अपने को संकट में डाल कर कार्य सम्पन्न करने वालों की विजय होती है, कायरों की नहीं। *-जवाहरलाल नेहरु*

ब्रह्म विद्या के प्रतीक–
(सुख के सागर चारों वेद)

आचार्य भगवानदेव वेदालंकार
(वैदिक प्रवक्ता)

1. मनुष्य की स्वाभाविक इच्छा है सुख की चाहत–
संसार में हम देखते हैं कि सभी मनुष्य सुख– ाान्ति चाहते हैं। सुख, ाान्ति और आनन्द ये तीनों मानव जीवन के ाुभा ाुभ कर्मों के उत्तम फल हैं।

सुख क्या है? 'सु' अर्थात् जो अनुकूल है। अच्छा लगता है 'ख' अर्थात् इन्द्रियों को। अनुकूलता में सुख का अनुभव होता है। 'सुख' इन्द्रियों से सम्बन्ध रखता है। जैसे– ई वर के द्वारा बनाया गया सुन्दर रूप, प्रकृति, पेड़–पौधे, सुन्दर फूल इन्हें देखना, आँखों' को अच्छा लगता है। 'सुगन्ध' नासिका को अच्छी लगती है। 'स्वादिष्ट पदार्थ' जिह्वा को अच्छे लगते हैं। 'मधुर–वाणी' कानों को अच्छी लगती है अर्थात् इन्द्रियों की अनुकूलता में सुख मिलता है।

चारों वेद – (1) ऋग्वेद (2) यजुर्वेद (3) सामवेद (4) अथर्ववेद ये सुख के सागर हैं, "वेदों का पढ़ना, सुनना और सुनाना"
इससे सुख प्राप्त होता है। ाान्ति मिलती है।
किसी कवि ने सत्य ही कहा है–
"जहाँ वेद पढ़ा जाए और यज्ञ किया जाए।
समझो उस परिवार को ही स्वर्ग कहा जाए।।

2. महर्षि दयानन्द की वेदों के प्रति आस्था–
स्वनामधन्य ज्ञानियों में अग्रगण्य महर्षि दयानन्द की वेदों में अनन्य आस्था और श्रद्धा थी। महर्षि ने भारतवर्ष को उच्चपदस्थ करने का महान व्रत लिया था। उन्होंने वेदों को इसका एक मात्र साधन बनाया। महर्षि ने पाखण्डखण्डिनी पताका लेकर, वेदों की प्रतिष्ठा स्थापित करने में कोई कसर न छोड़ी थी। उन्होंने वेद का स्थान सदैव ऊँचा रखा। महर्षि

दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रका ा के सप्तम समुल्लास में अथर्ववेद का प्रमाण देकर लिखा है-

यस्मादचो अपातक्षन् यजुर्यस्मादपाकषन्।
सामानि यस्य लोमान्यथर्वाङ्गिरसो मुखं
स्कम्भन्तं ब्रूहि कतमः स्विदेव सः।।

-अथर्ववेद काण्ड-10, प्रपाठक 23/अनु. 4-मन्त्र 2011

अर्थात् जिस महान ाक्ति से ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद प्रका ात हुए हैं वह परमात्मा सबको उत्पन्न करके धारण कर रहा है।

"स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छा वतीभ्यः समाभ्यः"।

-यजुर्वेद अध्याय 40-मन्त्र 8।।

जो स्वयम्भू सर्वव्यापक, ाुद्ध, सनातन, निराकार परमे वर है वह सनातन जीवरूप प्रजा के कल्याणार्थ, वेद द्वारा सब विद्याओं का उपदे ा करता है। वेदों के ज्ञान को सुनकर अत्यन्त ाान्ति, तथा आत्मसन्तोष प्राप्त होता है। वेद की कथा परम सुखदायी व असत्य और अज्ञानान्धकार को नष्ट करने वाली है।

3. निराकार ई वर ने कैसे, किन्हें और कब वेदों का प्रका ा किया?

परमे वर सर्व ाक्तिमान और सर्वव्यापक है। उसे जीवों को अपनी व्याप्ति से वेद विद्या का उपदे ा करने के लिए मुखादि की अपेक्षा नहीं होती तथा ई वर के अन्तर्यामी रूप होने से जिस व्यक्ति को जो कुछ कहना होता है, वैसे ज्ञान की प्रेरणा कर देता है। इसी प्रकार सर्वव्यापक परमे वर अपनी अखिल वेद विद्या का उपदे ा अपने व्यापक स्वरूप से जीवात्मा में प्रका ात कर देता है।

"अग्नेर्वा ऋग्वेदो जायते वायोर्यजुर्वेदः सूर्यात्सामवेदः"।

- ातपथ ब्राह्मण ग्रन्थ

सष्टि के आरम्भ में परमात्मा ने अग्नि, वायु, आदित्य तथा अङ्गिरा ऋषियों की आत्मा में एक-एक वेद का प्रका ा किया। फिर उन ऋषियों की आगे आने वाली सन्तानों को ब्रह्मादि

ऋषियों ने वेद का ज्ञान सुनाया। भगवान ने वेदरूपी अमत ज्ञान देकर मानव जाति का बड़ा उपकार किया है। इस प्रकार सुनने और सुनाने से वेद ज्ञान की रक्षा होती रही है और होती रहेगी।

4. ई वर वेद का ज्ञान किन आत्माओं को देता है?

वेद के ज्ञान को विद्वानों ने 'अमतवाणी' कहा है। वेद-ज्ञान अमत सरोवर है। आनन्द का पिटारा है। ऐसे अमत-ज्ञान का परमे वर, पवित्रात्माओं को, पवित्र अन्तःकरण वाले भद्र जनों को ही प्रका ा करता है। जैसे परमे वर ने सष्टि के आदि में सर्वाधिक पवित्र अन्तःकरण वाले चार ऋषियों को वेद ज्ञान प्रदान किया वैसे ही परमे वर पवित्र अन्तःकरण वाले भद्र जनों को वेद का ज्ञान प्रदान करता है।

5. ई वर ने वेद-ज्ञान किस भाषा में दिया?

परमात्मा ने 'वेद का ज्ञान' किसी भी दे ा की मात-भाषा में प्रदान नहीं किया। यदि ई वर किसी दे ा की मात-भाषा में ज्ञान देता, तो ई वर पक्षपाती बन जाता। इससे एक दे ावासी को वेद पढ़ने में आसानी हो जाती और दूसरे दे ावासी को कठिनाई। इससे उस न्यायकारी परमे वर ने वेद का ज्ञान **संस्कृत-भाषा** में प्रदान किया जो किसी भी दे ा की मात-भाषा नहीं थी। वेदों की भाषा अन्य भाषाओं की जननी है।

6. ज्ञान देने वाला - सबसे पहला गुरु कौन था?

योगद ान के आचार्य पतञ्जलि ऋषि लिखते हैं कि

"सः पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात्"।। योगद ान।26।।

अर्थात् जैसे वर्तमान समय में हम लोग अध्यापकों से पढ़कर ही विद्वान् होते हैं, वैसे ही परमे वर **गुरूणां गुरुः** गुरुओं का भी गुरु, सष्टि के आरम्भ में उत्पन्न हुए अग्नि आदि ऋषियों का गुरु है। परमात्मा ने ऋषियों को संस्कृत का ज्ञान कराया। धर्मात्मा, योगी, महर्षि लोग जब-जब जिस-जिस के अर्थ को जानने की इच्छा करके ध्यानावस्थित हो परमे वर के स्वरूप में समाधिस्थ हुए, तब-तब परमात्मा रूपी गुरु ने अभीष्ट मन्त्रों के अर्थ स्पष्ट किए।

7. विद्वान् आचार्यों के वेद के सम्बन्ध में विचार–

पण्डित गंगा प्रसाद जी उपाध्याय का कथन है–

"इस दीर्घकालीन सष्टि के इतिहास में सैकड़ों मतमतान्तर और धर्म ास्त्र बने और बिगड़ गये। करालकाल के थपेड़ों से वेद का बचे रहना यह सिद्ध करता है कि प्रकृति वेदों की रक्षा करती है जैसे सैकड़ों तूफान जिनसे बड़े-बड़े मनुष्य-निर्मित दीपक बुझ जाते हैं, सूर्य को नहीं बुझा सकते इसी प्रकार वेद हैं।" संसार में अनेक परिवर्तन हो चुके हैं। वेद आज भी सुरक्षित हैं। वेद प्राचीनतम हैं। कभी सारा संसार वेदानुयायी था और वैदिक धर्म संसार का धर्म था।

8. वैदिक साहित्य में किन-किन से ग्रन्थों की गणना की जाती है–

चार वेदों के चार उपवेद हैं चार ब्राह्मण ग्रन्थ हैं। वेदों के व्याख्यान ग्रन्थों का नाम ब्राह्मण ग्रन्थ है

	वेद	**उपवेद**	**ब्राह्मणग्रन्थ**
1.	ऋग्वेद	आयुर्वेद	ऐतरेय
2.	यजुर्वेद	धनुर्वेद	ातपथ
3.	सामवेद	गान्धर्ववेद	साम
4.	अथर्ववेद	अर्थवेद	गोपथ

वेदांग छः हैं–जिनके माध्यम से वेदों को और अच्छी प्रकार से समझा जा सकता है।

1. िाक्षा 2. कल्प 3. व्याकरण
4. निरुक्त 5. छन्द 6. ज्योतिष

वेदों के छः उपांग हैं – इन ग्रन्थों में ऋषियों ने सूत्र रूप में प्रकृति, ई वर, आत्मा आदि के लक्षण, ई वर प्राप्ति के साधनों का उल्लेख किया है – इन्हें द ानिग्रन्थ कहा जाता है।

1. गौतम ऋषि का न्यायद ान
2. पतञ्जलि ऋषि का योगद ान
3. कणाद ऋषि का वै ोषिक द ान
4. कपिल ऋषि का सांख्यद ान

5. जैमिनी ऋषि का मीमांसा
6. वेदव्यास ऋषि का वेदान्त द र्न प्रसिद्ध है।

प्रामाणिक उपनिषदें 11 हैं–

उपनिषदों में ब्रह्म–विद्या, आत्मा, मोक्ष, परा–अपरा विद्या आदि का वर्णन है। इन ग्रन्थों को ऋषियों ने लिखा है। उन्हें तप करके जो अनुभव प्राप्त हुआ उस ज्ञान का उपनिषदों में सुन्दर ढंग से उल्लेख है निम्नलिखित ग्यारह उपनिषदें हैं–

1. ई ोपनिषद् 2. केनोपनिषद् 3. मुण्डकोनिषद्
4. कठोपनिषद् 5. माण्डूक्योपनिषद् 6. वेता वतर उपनिषद्
7. प्र नोपनिषद् 8. तैत्तिरीयोपनिषद् 9. ऐतरयोपनिषद्
10. छान्दोग्योपनिषद् 11. बहदारण्यकोपनिषद्

इनके अतिरिक्त मनुस्मति आदि जो ग्रन्थ वेद–मत के अनुकूल हैं वैदिक साहित्य के अन्तर्गत आते हैं। स्थान अभाव के कारण हम उनका उल्लेख नहीं कर रहे हैं।

9. सुख– ान्ति का मार्ग–

कुछ लोग पूछते हैं कि वेद में क्या है? ऋषि इसका उत्तर देते हैं कि वेद सारे धर्म का मूल है। सुख, ान्ति और समद्धि का सच्चा मार्ग है। ब्रह्म विद्या का प्रतीक सुख का सागर है। इसलिए वेद का पढ़ना–पढ़ाना, सुनना और सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

परमपिता परमात्मा की सत्प्रेरणा से हमें वेद पढ़ने का आ ीर्वाद मिले।

सब वेद पढ़ें सुविचार बढ़े, बल पाय चढ़ें नित ऊपर को।
अविरुद्ध रहें, ऋजु पन्थ गहें, परिवार कहें वसुधा–भर को।
ध्रुव धर्म धरें पर दुःख हरें, तन त्याग तरें भवसागर को
दिन फेर पिता वर दो सविता, हम श्रेष्ठ करें निज जीवन को

44ए, दूसरी मंजिल, बी.ब्लॉक, बुध बाजार,
फेस–2, विकासनगर, नई दिल्ली–110059
मो. 9250906201

मकर संक्रान्ति : सूर्य के स्वागत का पर्व

-डॉ. मधु पोद्दार

प्राचीनकाल से ही भारत पर्वों व उत्सवों का दे ा रहा है। उत्सव हमारी संस्कृति, सभ्यता, व भाईचारे के प्रतीक हैं। त्यौहारों का जहाँ धार्मिक व सामाजिक महत्त्व है वहीं वैज्ञानिक महत्त्व भी है। वि व के अन्य दे ाों में अधिकतर त्यौहार ईसाइयों व इस्लाम के विभिन्न पैगम्बरों के जीवन काल की मुख्य घटनाओं के आधार पर मनाये जाते हैं जबकि भारत में पथ्वी, गाय व नदियों को माता का दर्जा एवं पर्वतों और ग्रहों को देवता का दर्जा देकर प्रकृति का पूर्ण सम्मान देने की प्रथा रही है। इसीलिए वर्षभर उत्सव मनाये जाते हैं। होली, दीपावली, द ाहरा, रक्षाबन्धन जैसे धार्मिक व सामाजिक त्यौहारों या मकर संक्रान्ति, वै ााखी व कुम्भ जैसे प्राकृतिक महत्त्व के उत्सवों का एक ही उद्दे य है कि हम इनके द्वारा आपसी प्रेम, एकता व भाइचारे का सन्दे ा दें इन त्यौहारों को मानने के तरीके अलग-अलग राज्यों में भिन्न-भिन्न हों।

मकर संक्रान्ति भारत का एक प्रमुख राष्ट्रीय, धार्मिक, सामाजिक, प्राकृतिक त्यौहार है जो हर वर्ष 14 जनवरी को मनाया जाता है। यह सूर्य भ्रमण से सम्बन्धित पर्व है। इस दिन सूर्य दक्षिणी गोलार्द्ध से उत्तरी गोलार्द्ध में मकर रा ि में प्रवे ा करता है इसीलिए इसे मकर संक्रान्ति कहा जाता है। वास्तव में सूर्य एक वर्ष में 12 रा ियों (मेष से मीन) में भ्रमण करता है व हर रा ि से दूसरी रा ि में प्रवे ा करता है तो उसे संक्रान्ति कहते हैं। इस समय को उत्तर अयनान्त कहते हैं। 21 दिसम्बर को सूर्य दक्षिणी गोलार्द्ध की अन्तिम सीमा मकर रेखा पर होता है जिसे दक्षिण अयनान्त कहते हैं व ि ि र ऋतु में 24 जनवरी को मकर रा ि में प्रवे ा कर जाता है तब उत्तरायण ुरू हो जाता है। 21 दिसम्बर को सूर्य उत्तरी गोलार्द्ध से अधिकतम दूरी पर होता है अतः उस दिन सबसे लम्बी रात व सबसे छोटा दिन होता है। उसके बाद सूर्य के मकर रा ि में प्रवे ा के साथ ही दिन लम्बे होने लगते हैं, ठंड कम होने लगती है। सूर्य के बढ़ते प्रका ा से खेत खलिहान भी पनपते हैं व नई फसलें भी तैयार होने लगती हैं। इसके अलावा पौराणिक

व धार्मिक दष्टिकोण से भी उत्तरायण को श्रेष्ठ माना गया है व ऐसी धारणा है कि उत्तरायण में मत्यु होने पर मोक्ष या स्वर्ग की प्रप्ति होती है। इसीलिए भीष्म पितामह ने अर्जुन के बाणों से घायल होने पर ार ाय्या पर लेटे-लेटे उत्तरायण में ही प्राण त्यागने की इच्छा व्यक्त की थी। प्राकृतिक व पौराणिक महत्व के अलावा मकर संक्रान्ति सामाजिक समरसता का भी प्रतीक है यानि दो तत्वों व विचारों का मिलन। इसीलिए इस दिन खिचड़ी, गुड़ व तिल का सेवन महत्त्वपूर्ण है जो ऋतु परिवर्तन व ीत के दुष्प्रभाव से बचाते हैं। मकर संक्रान्ति का पर्व भारत के अनेक राज्यों में विभिन्न नामों से मनाया जाता है-जैसे पंजाब में लोहड़ी, बिहार में मकर संक्रान्ति, असम में भोगली बीहू, दक्षिण में पोंगल, उत्तरप्रदे ा में तिल संक्रान्ति, मध्यप्रदे ा में खिचड़ी संक्रान्ति, गुजरात व महाराष्ट्र में तिलागुड, एवं उत्तराखंड में धुधलिया और पुसड़िया। हर जगह इसका मुख्य उद्दे य सूर्य की उपासना ही है क्योंकि सूर्य ऊर्जा का प्रमुख स्रोत है जिसके बिना जीवन असम्भव है। सूर्य की किरणों से हमारा स्वास्थ्य व प्रकृति प्रभावित होती है अतः ीत की जड़ता को कम करके, स्वस्थ्य जीवन व अच्छी कृषि के लिए सूर्य उपासना की जाती है। यही उसका वैज्ञानिक आधार है।

आइए, देखें भारत में विभिन्न राज्यों में मकर संक्रान्ति कैसे मनाते हैं?

1. जम्मू में इस पर्व के अवसर पर बच्चे हफ्तों पहले छज्जा बनाते व सजाते हैं। लोहड़ी के दिन दल बनाकर वे एक दूसरे के घर जाकर गीत गाते व उपहार लेते हैं। इस अवसर पर रंग-बिरंगी झाँकियाँ भी निकाली जाती हैं।
2. पंजाब में इसे लोहड़ी कहते हैं क्योंकि 13 जनवरी को ि ाि ार ऋतु की सबसे ठंडी रात मानी जाती है अतः इस दिन जगह-जगह लकड़ियाँ इकट्ठी करके जलाई जाती हैं व अग्नि देवता को तिल, गुड़, मक्का आदि अर्पित किए जाते हैं। लोहड़ी का अर्थ है लौह यानि तवा या आग। अतः अग्नि के सामने सारे दुःख व भेदभाव भुलाकर नत्यगान होता है व अगले दिन सुबह स्नान करके सूर्य की उपासना

करके ऊर्जा का आह्वान किया जाता है क्योंकि फसल पकने को होती है पर ठंड से संकुचित हो रही होती है। इस दिन मूँगफली, गुड़, मकई, चावल, नारियल इत्यादि का दान दिया जाता है। ये सभी कृषि उत्पाद है व ीतकाल में स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है।

3. असम में इसे माघ बीहू या कृषि पर्व के नाम से मनाते हैं। इस दिन बाँस-फूस की मेजि बनाकर उसमें आग लगाई जाती है व चावल की आहुति देकर उसकी राख सभी खेतों में फैला दी जाती है ताकि अधिक अन्न की उपज हो। ााम को कीर्तन व निरामिष भोजन एवं नत्य-गीत की परम्परा है।
4. महाराष्ट्र में यह पर्व तिलागुड़ नाम से मनाया जाता है। महिलाएँ सौभाग्य की प्रतीक वस्तुओं की पूजा अर्चना करके भेंट स्वरूप बाँटती हैं साथ ही मिट्टी के छोटे-छोटे पात्रों में ईख, ज्वार व बेर रखकर बाँटती हैं जिसे बाणा कहा जाता है। ााम को बच्चे बड़ों को नमन करके तिल व गुड़ का आदान-प्रदान करते हैं व आ ाीर्वाद लेते हैं।
5. तमिलनाडु में इसे पोंगल कहते हैं, इस दिन वे पोंगल (गन्ने के रस की खीर) बनाते हैं। आन्ध्रप्रदे ा में इसे तीन दिन तक मनाया जाता है। कई दिन पहले से घरों को रंग-बिरंगे अबीरों व बेलों से सजाकर युवतियाँ गौरी का प्रतीक चिह्न (गायम) बनाकर पूजती हैं। बाद में प्रसाद बाँटा जाता है। दूसरे दिन पुत्री व दामाद को बुलाकर कपड़े व मिठाइयाँ देते हैं। बच्चे पतंग उड़ाते हैं। नदियों, तालाबों व सरोवरों में नावों पर भगवान का उत्सव व पंचांग का श्रवण होता है तथा घरों में नये-नये पकवान बनाकर काम करने वालों को चावल व कपड़े भेट किए जाते हैं। तीसरे दिन प ाुओं की सफाई व सजावट करके उन्हें खूब खिलाया जाता है। कर्नाटक में लोग ि ाव, कृष्ण व हनुमान का जुलूस निकालते हैं व खीर (पोंगल) बनाते व बैलों की पूजा करते हैं। केरल में भी मकर संक्रान्ति पर पोंगल बनाकर व प ाुओं की पूजा करके हर्षोल्लास से मनाते हैं।

6. उत्तरप्रदे ा में हर राज्य का मिला-जुला प्रभाव है व संक्रांति के दिन गंगा स्नान व सूर्य उपासना के बाद खिचड़ी, गुड़, मूँगफली का दान दिया जाता है। तिल की मिठाइयाँ बनाते हैं तथा पतंग उड़ाते हैं।

भारत के अलावा तिब्बत, नेपाल व भूटान में भी मकर संक्रान्ति का पर्व मनाया जाता है। फिजी, मारि ास व सूरीनाम का भी यह मुख्य त्यौहार है। ईसा के जन्म से पहले यूरोप के दे ाों में भी यह त्यौहार विभिन्न नामों से मनाया जाता था। रोम में 17 से 24 दिसम्बर तक 'सतरनलिया' त्यौहार मनाया जाता था जिसमें कृषि के देवता ानि की पूजा होती थी। 25 दिसम्बर को मिथराजन्म या सूर्य जन्मोत्सव मनाया जाता था। पर ईसा के 336 ई. बाद प्राचीन त्यौहार का स्थान क्रिसमस ने ले लिया। उस दिन ईसाई लोग ईसा को वि व का प्रका ा मानकर उसका जन्मदिन मनाने लगे।

वास्तव में मकर संक्रान्ति सूर्योपासना का पर्व है, चाहे किसी भी दे ा या राज्य में इसे किसी भी नाम या तरीके से मनाया जाये परन्तु एकता, भाईचारे व समरसता का सन्दे ा देता हुआ यह पर्व प्रकृति व पंचतत्व को नमन तथा प्रकृति द्वारा उस सर्व ाक्तिमान की अराधना का दिन है।

प्रेरणा या सन्दे ा - हर त्यौहार हमें कोई न कोई सन्दे ा देता है, इसी तरह मकर संक्रान्ति भी हमें कई संदे ा देता है-

1. सूर्य प्रकृति का स्वरूप है अतः यह पर्व प्रकृति व पर्यावरण को बचाने का संकल्प लेने की प्रेरणा देता है।
2. सूर्य ऊर्जा का स्रोत है अतः ऊर्जा का सदुपयोग करने का सन्दे ा देता है।
3. मकर संक्रान्ति परिवर्तन का सन्दे ा देता है। अतः समाज व दे ा में होने वाले परिवर्तन व समस्याओं पर चिन्तन करने व सुधारने के उपाय की प्रेरणा मिलती है।
4. मकर संक्रान्ति सामाजिक समरसता का सन्दे ा देता है यानि तिल, गुड़ व खिचड़ी की तरह मिल-जुलकर समाज हित में कार्य करें।

जे-64-पटेल नगर गाजियाबाद (उ.प्र.)

स्वाधीनता संग्राम के पुरोधा लाला लाजपतराय

-प्रो. लालमोहर उपाध्याय

लाला लाजपतराय अपने आप में एक संस्था थे। अपने यौवनकाल से ही उन्होंने दे ा भक्ति को अपना कार्य क्षेत्र बना लिया था। उनकी राष्ट्रीयता अन्तरराष्ट्रीयता से परिपूर्ण थी। उनकी सेवाएँ विविध थीं। महात्मा गाँधी

लाला जी न केवल महान ाक्तिमान और राष्ट्रवादी थे, बल्कि इस धरती के महान सपूत थे। पं. जवाहरलाल नेहरु

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में बाल, पाल और लाल को कौन नहीं जानता। स्वयं को होम कर देने वाले वीरों में लाला लाजपतराय की प्रतिभा अद्‌भुत और बहुमुखी थी।

लाला लाजपतराय में राष्ट्रीयता की भावना कूट-कूटकर भरी थी। वे छात्र जीवन से ही स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भाग लिया करते थे। इलाहाबाद में आयोजित कांग्रेस अधिवे ान में लाला जी ने जोरदार ाब्दों में भाषण देते हुए डंके की चोट पर कहा था, "अंग्रेज जितनी घणा ि ाक्षा से करते हैं, उतनी और किसी से नहीं। वस्तुतः भिक्षुक ऐसी घणा का अधिकारी नहीं होता है। हमको चाहिए कि अच्छी तरह दिखा दें कि हममें भी आत्म ाक्ति जागत हो गई है और अब हम अपने को भिखारी नहीं समझते।"

1905ई. में इंग्लैण्ड में संसद का निर्वाचन होने वाला था। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी से विचार किए जाने के बाद भारत के हित के लिए निर्वाचन के समय जो ि ाष्टमंडल इंग्लैण्ड भेजा गया, उसका नेतत्व लाला लाजपतराय ही कर थे। सन् 1927 में ब्रिटि ा सरकार ने भारतीयों की समस्याओं को जानने के लिए एक कमी ान भारत में भेजा, जो साईमन कमी ान के नाम से विख्यात है। भारत के लोगों ने इस कमी ान का विरोध करने का निर्णय किया। इसके लिए विराट् प्रद ान का आयोजन किया गया, जिसका सफल नेतत्व लाला जी ने ही किया था। 30 अक्टूबर 1927 ई. को यह लाहौर पहुँचने वाला था। लाला जी के नेतत्व में कमी ान को काले झंडे दिखाने का कार्यक्रम था। ब्रिटि ा सरकार को इसकी खबर लग गई। इसे दबाने के लिए सख्त प्रबंध किये गये। साथ ही नगर में धारा 144 लगा दी गई। इसके बावजूद भारत माँ के सपूत सिर पर कफन बाँधकर भारतमाता की लाज रखने वाले स्वतंत्रता संग्राम के पुरोधा लाला जी के नेतत्व में

प्रद ानिकारियों ने 'साइमन गो बैक' (साइमन वापस जाओ) के गगन-भेदी नारे लगाए। लाहौर रेलवे स्टे ान पर लाठी चार्ज हुआ। अनेक प्रद ानिकारी गम्भीर रूप से घायल हुए। लाला जी भी बुरी तरह घायल हो गए। घायल सिंह की तरह लाजपतराय ने उस दिन सिंह गर्जना करते हुए अपने भाषण में कहा- "मेरे ारीर पर पड़ा लाठी का एक-एक प्रहार अंग्रेजी साम्राज्य के कफन की कील बनेगा।" अंततः भारत माता का यह सपूत 17 नवम्बर, 1927 को ाहीद हो गया। दे ा भक्ति की यह कड़ी आद ा अटूट कड़ी है।

अंग्रेजों से इसका बदला लेने के लिए क्रान्तिकारियों की एक गुप्त बैठक हुई, जिसमें प्रमुख थे- सरदार भगतसिंह, चन्द्र ोखर आजाद, राजगुरु और सुखदेव सिंह। इन क्रान्तिकारियों ने 17 दिसम्बर 1927 को ही बदला ले लिया। दूसरे दिन एक लाल पर्चा बाँटा गया, जिसमें यह उद्घोषणा की कि हिन्दुस्तान सोसलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिए ान ने लाला जी के खून का बदला ले लिया है। पर्चे में लिखा था-

"एक मामूली पुलिस अधिकारी द्वारा दे ा के इतने बड़े नेता की, जिसको लाखों लोग पूजते थे, हत्या एक राष्ट्रीय अपमान है। दे ा के नौजवानों का यह कर्तव्य है कि वे इस कलंक को धोएँ। आज दुनिया ने देख लिया है कि हिन्दुस्तान के लोग सोए हुए नहीं हैं और अपने दे ा को बचाने के लिए कोई कीमत उनके लिए बड़ी नहीं है। सांडर्स को मारकर हमने ब्रिटि ा राज्य के एक दलाल को मारा है। आदमी का खून बहाने में हमें तकलीफ होती है, किन्तु क्रान्ति की बलि वेदी पर खून चढ़ाना लाज़िमी है। हमारा उद्दे य उस क्रांति को लाना है, जिससे आदमी के द्वारा हो रहे आदमी के ोषण को रोका जा सके।"

क्रान्तिकारी भगतसिंह का लाला जी के बारे में कहना था- "वे हमारे पिता थे। हम उनके हाथों जन्मे, पले, उनसे पढ़े। एक पुत्र-पिता में बहुत सारे मतभेद हो सकते हैं, परन्तु हमारे पिता को कोई दूसरा आकर मार दे यह हम सहन नहीं कर सकते।" आज हम ऐसे ही दे ाभक्तों के खून से सिंचित आजादी को भोग रहे हैं, आज की परिस्थिति में लाला जी की दे ा के प्रति अखंड भक्ति हमारे लिए प्रका ा स्तम्भ है।

190ए/2, पंचवटी
(विनायकपुर), कानपुर-207024 (उ.प्र.)

धर्मवीर हकीकतराय का बलिदान

–गुरुदत्त

यह तथ्य सर्वविदित है कि इस्लाम की ि।क्षा देनेवाले उस मकतब का अध्यक्ष जो मुल्ला था, वह हकीकतराय जैसे बुद्धिमान बालक को अपने मकतब में प्रविष्ट कराकर बहुत प्रसन्न हुआ था। एक तो इस कारण भी कि मुल्लासाहब को मिठाई देकर प्रसन्न किया गया था और इसके साथ ही कुछ मासिक दान–दक्षिणा देने का भी आ वासन दिया गया था। उस समय उसकी आयु ग्यारह वर्ष की थी। उसने दो वर्ष तक वहाँ अध्ययन किया। जब बालक हकीकत तेरह वर्ष का हुआ तो उसके माता–पिता ने लक्ष्मी नाम की नौ वर्ष की कन्या के साथ उसका विवाह कर दिया।

हकीकतराय के विवाह के कुछ समय बाद मुल्ला के मकतब में झगड़ा हो गया। इस झगड़े का मुख्य कारण हकीकतराय ही था। वह बहुत ही तीव्र बुद्धि का कि ाोर था। जो बात अन्य विद्यार्थी एक सप्ताह में स्मरण और कण्ठस्थ करते थे उसे हकीकतराय एक ही दिन में समझ और स्मरण कर लेता था। परन्तु ऐसा क्यों है? इस सम्बन्ध में हमारा सुविचारित मत तो यही है कि पूर्वजन्म के कर्मफल से भी मन और बुद्धि मिलती है और श्रेष्ठ मन और बुद्धि प्राप्त करने वालों को हिन्दूसमाज में जन्म मिलता है। किन्तु विजातियों के लिए यह सब समझ पाना बहुत कठिन है। गाय का दूध और उसके घी का प्रयोग भी एक मुख्य कारण रहा है। यही कारण है कि हिन्दू गाय को पूज्य मानते हैं और मुसलमान तथा अन्य विजातीय उसको वध्य मानते हैं।

मुसलमान और ईसाई यह भी स्वीकार नहीं करते कि जीवात्मा का पुनर्जन्म भी होता है। इन मतों की मान्यता है कि जब मनुष्य मर जाता है तो उसकी आत्मा भी उसके ारीर के साथ ही कब्र में दबी पड़ी रहती है और जब प्रलय (कयामत) आएगी तो उस समय कब्रों से सभी आत्माएँ उठेंगी और परमात्मा उनके आचरणों तथा कर्मों का निरीक्षण कर उनको स्वर्ग अथवा नरक में भेजेगा।

उनकी मान्यता है कि प्रत्येक जन्म लेने वाले प्राणी को नई आत्मा प्राप्त होती है। यही कारण है कि वे लोग हिन्दू–जीवन–मीमांसा को न समझते हुए यह नहीं मानते कि इस जन्म से पहले भी उनकी आत्मा किसी प्रकार के जीवन में

रही है और उस जीवन में वह अच्छे अथवा बुरे कर्म करता रहा है। इस जन्म में वह रीर, इन्द्रियाँ तथा मन और बुद्धि अपने पूर्वजन्म के कर्मों के अनुसार पाता है।

इस प्रकार एक ही माता-पिता के घर में जन्म लेने पर भी भिन्न-भिन्न स्थितियों, सुविधाओं और कर्मफलों को भोगनेवाले बच्चे देखे जाते हैं। हिन्दूलोग इस जीवन-मीमांसा को अकारण नहीं मानते। पूर्वजन्म के कर्म-फलों के फलस्वरूप ही इसे मानते हैं।

यह हमारी सुनिर्ा चत धारणा है कि हकीकतराय का आत्मा पूर्वजन्म में अव य ही अतिश्रेष्ठ कर्म करने वाला होगा क्योंकि वह उस मकतब में पढ़नेवाले सभी विद्यार्थियों से प्रखर बुद्धिवाला था।

उस मकतब में ज्यादा मुसलमान विद्यार्थी ही थे। वे सभी उससे ईर्ष्या रखते थे। उनका यत्न यही होता था कि वे अपने मुल्ला के सम्मुख हकीकत को किसी न किसी प्रकार हीन सिद्ध करें। हकीकतराय का विवाह हुआ ही था और वह विवाह के उपरान्त पाठ ाला में आया ही था कि एक दिन उसका अपनी कक्षा के विद्यार्थियों से झगड़ा ही गया। झगड़ा किसी वि ोष बात के कारण नहीं था। साधारण-सी बात थी। उस समय मुल्ला जी कक्षा में नहीं थे। सम्भवतः वे पाठ ाला से भी बाहर चले गए थे। इसे अच्छा अवसर जानकर विद्यार्थी पढ़ना छोड़कर खेल-कूद में लग गए। हकीकराय पढ़ने के समय को खेल-कूद में नष्ट करना नहीं चाहता था। इस कृत्य पर अन्य लड़के उसकी हँसी उड़ाया करते थे। उसको 'पढ़ाई का कीड़ा' कहा करते थे। वह बैठा हुआ अपना पाठ याद करता रहा। अन्य लड़कों ने यही समझा कि हकीकत हर समय पढ़ता ही रहता है इसी कारण यह कक्षा में प्रथम रहता है और तीव्र बुद्धिवाला माना जाता है। उसको पढ़ते देखकर वे उसको उठाकर बाहर मैदान में ले जाना चाहते थे। उन्होंने जब उसको बलपूर्वक उठाना चाहा तो हकीकतराय के मुख से निकल गया, 'कसम दुर्गा भवानी की, मुल्ला जी के आने पर मैं तुम सबकी ि ाकायत कर दूँगा।' मुसलमान लड़कों ने हिन्दू देवी की ापथ लेते सुन हकीकत को नहीं अपितु उसकी आराध्या देवी भवानी को ही गाली देनी आरम्भ कर दी। किसी लड़के ने यह भी कह दिया, 'उस हरामजादी को लाओ तो सही, वह है कहाँ?' परिवार की पूज्या देवी को जब मुसलमान विद्यार्थियों ने इस

प्रकार गालियाँ देनी आरम्भ कीं तो हकीकत राय को क्रोध आ गया। उसने भी उसी प्रकार की बात बीबी फातिमा के लिए कह डाली। बस, इतना सुनते ही दुष्ट चिल्ला उठे, और मुल्ला ने लौटने पर सारी बात सुनी। यह समझते हुए भी कि ाारत की जड़ तो मुस्लिम बच्चे थे, वह अपने आपको कुछ करने में बेबस पा रहा था। परिणामस्वरूप नगर- ाासक के पास अभियोग लाया गया। निर्णय सुनाया गया कि वह मुसलमान हो जाए, अन्यथा उसको मत्युदंड दिया जाएगा।

इस अन्याय के विरुद्ध नगर के प्रतिष्ठित हिन्दुओं सहित लाला भागमल जी फरियाद लेकर लाहौर के हाकिम के पास गये। यह समझकर भी, कि यहाँ के भयभीत हाकिम ने यह केस मुख्य काजी को सौंप दिया, सहमत न होते हुए भी उसने पिछले निर्णय पर ठप्पा लगा दिया कि नाजिम लाहौर बालक की कोमलता व सुन्दरता पर मुग्ध हो उसे बचाना चाहता था। वह मुल्लाओ के निर्णय के विरुद्ध तो न बोल सका, परन्तु बच्चे को लाड़-प्यार द्वारा धर्म से गिराने का प्रयास करने लगा। उसने कहा कि तुम बच सकते हो, मैं तुम्हें बचाना चाहता हूँ, अपने माँ-बाप के लिए, अपनी पत्नी के लिए तुम जीवित रहोगे। मैं अपनी बेटी का तुमसे निकाह कर दूँगा। ऊँचे पद पर तुम्हें नियुक्त करूँगा। अपनी माँ के आँसुओं की तरफ देख तथा मुसलमान बनना स्वीकार कर, मगर हकीकत राय पर इसका कोई प्रभाव न पड़ा।

रोते-बिलखते माता-पिता के सामने हकीकतराय को न मत्यु का भय था, न चिंता। वह अपनी मान्यताओं पर मर मिटने के लिये तैयार था। अपने ना ावान् चोले की चिंता किये बिना वह हिन्दू जाति के लिये निर्भयता, निडरता का एक उदाहरण प्रस्तुत कर गया।

हकीकत का पक्ष लाहौर के नाजिम के सामने स्पष्ट व सीधा था कि जो अपराध उसने किया है, उससे बड़ा अपराध उसके मुसलमान साथियों ने किया है। किन्तु मुल्लाओं से डरने वाले हाकिम के पास इसका कोई उत्तर न था। परिणामस्वरूप धर्मप्रिय बालक ने धर्म बदलने के स्थान पर सिर देना स्वीकार किया। वीर बालक का दाह संस्कार बड़ी धूमधाम से लाहौर में किया गया। लाहौर से लगभग पाँच किलोमीटर दूर रावी नदी के तट पर कोट खोजे ााह के क्षेत्र में वसंतोत्सव पर दाह संस्कार किया गया। बाद में वहाँ उसकी समाधि बनी।

जब आज़ाद हिन्द फौज ने प्रथम गोली दागी
(23 जनवरी को नेताजी की जयन्ती पर)

अंडमान से नेताजी ने हवाई जहाज द्वारा बर्मा के लिए प्रस्थान किया और वहाँ जाकर अस्थायी सरकार, भारतीय स्वतंत्रता लीग तथा आई.एन.ए. की सर्वोच्च कमान का मुख्यालय जनवरी 1944 के प्रथम सप्ताह में रंगून स्थानान्तरित किया। इस प्रकार दो मुख्यालय बने- एक रंगून में और दूसरा सिंगापुर में। सरकार, लीग एवं आई.एन.ए. के साथ नेताजी के मुख्यालय का बर्मा स्थानांतरण आंदोलन की एक महत्वपूर्ण घटना थी। भारत बर्मा से सीमा की दष्टि से ही पथक् था। यहाँ से नेताजी और मुक्ति सेना के लिए भारत के पूर्वी द्वार तक पहुँचना और अंग्रेजों को अपनी मातभूमि से बाहर निकालने के लिए भारत के अंदर प्रवे ा करना सुगम था। अतः अब उन्होंने अपना समस्त ध्यान एवं ाक्ति बर्मा को अपना कार्यक्षेत्र बनाने में लगाई। वे बर्मा को आक्रमण का अड्डा बनाने के लिए कृतसंकल्प थे, जिससे वे भारत में अंग्रेजों की गर्दन पर झपट सकें।

युद्ध-स्थल के लिए उद्यत आई.एन.ए. की सेनाओं को देखकर बर्मा में भारतीयों के हृदयों में उत्साह की लहर दौड़ गई। नेताजी के युद्धफंड के लिए बर्मा में भारतीयों से आर्थिक सहयोग लेने के लिए रंगून में नेताजी फंड समिति बनाई गई। दे ा की स्वतंत्रता के लिए सब कुछ बलिदान करने की नेताजी की अपील का लोगों ने अत्यधिक स्वागत किया। नेताजी ने भारतीयों द्वारा सम्मेलनों में उन्हें समर्पित मालाओं को नीलाम करना अरम्भ किया। श्रोताओं ने उनकी मालाओं को एक लाख, दो लाख और पाँच लाख रुपये देकर भी क्रय किया। रंगून के एक नागरिक श्री हबीब ने अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति, मकान, भूमि, आभूषण, जिनका मूल्य एक करोड़ रुपये से ऊपर था, दे दी। नेताजी इसे हँसी में हबीब मिक चर कहते थे और सभी भारतीयों को इस मिक चर से प्रेरणा लेने के लिए कहते थे। अपनी समस्त लौकिक धन-सम्पत्ति के समर्पण के साथ-साथ हबीब ने अपनी सेवाएँ तथा अपना जीवन भी

नेताजी को समर्पित कर दिया। रंगून की श्रीमती हेमराज बटाई ने भी अपनी समस्त लौकिक सम्पत्ति नेताजी को दे दी। उनके त्याग को महत्त्व प्रदान करने के लिए नेताजी ने उन्हें सेवक–ए–हिन्द पदक द्वारा सम्मानित किया। पूर्ण सक्रियता लाने के उद्दे य से नेताजी ने सरकार और लीग संस्था का विस्तार किया। उन्होंने आपूर्ति विभाग, मानव ाक्ति एवं माल विभाग में मंत्रियों की नियुक्ति करके सरकार के आधार को दढ़ बनाया। सरकार नीति निर्धारित करती थी, परन्तु दैनिक कार्यों में उसका कार्यान्वयन लीग संस्था द्वारा समस्त क्षेत्र में फैली ाखाओं के माध्यम से किया जाता था। इस दष्टि से नेताजी ने लीग के मुख्यालयों की संख्या, जो सिंगापुर में 12 थी, बढ़ाकर 24 कर दी।

रंगून में भारतीय स्वतंत्रता लीग के मुख्यालय में 24 विभाग थे– वित्त, लेखा, परीक्षण, नेताजी फंड समिति, आपूर्ति बोर्ड, क्रय बोर्ड, माल विभाग, भर्ती एवं प्र ाक्षण, महिला विभाग (झांसी की रानी रेजिमेंट सहित), प्रचार एवं प्रसार, ि ाक्षा, स्वास्थ्य एवं समाज कल्याण, राष्ट्रीय योजना, गुप्तचर विभाग, सूचना, उत्पादन, पुनर्निमाण, आवास एवं परिवहन, विदे ा, श्रम और ाखाएँ।

नेताजी के अपने बर्मा मुख्यालय में चले जाने के प चात् सैनिक कार्यों के लिए भूमि तैयार हो गयी। इसका विस्तार आई.एन.ए. मलाया से थाईलैंड और बर्मा होते हुए लंबा रास्ता तय करके भारत की सीमा तक हो गया।

तभी भारत की स्वतंत्रता की दूसरी लड़ाई में आई.एन.ए. द्वारा प्रथम गोली दागे जाने का रोमांचकारी समाचार मिला। आई. एन.ए. ने 4 फरवरी 1944 को अराकान युद्ध मोर्चे पर लड़ाई आरम्भ की और विजय प्राप्त की।

आई.एन.ए. के इतिहास में 17 मार्च 1944 का दिन स्वर्णिम दिन के रूप में सदैव स्मरणीय रहेगा। क्योंकि इसी दिन आई.एन. ए. ने सीमा पार करके भारत की पावन भूमि पर अपने कदम रखे थे। 21 मार्च को एक प्रेस सम्मेलन में नेताजी ने एक नाटकीय घोषणा करके सम्पूर्ण संसार को इस ऐतिहासिक घटना

की सूचना दी। प्रत्येक मास की 21वीं तारीख पूर्वी एिाया में भारतीयों के लिए एक पावन दिन था क्योंकि अक्टूबर 1943 को इसी दिन नेताजी ने पूर्वी एिाया में आजाद हिन्द की अस्थायी सरकार की स्थापना की घोषणा की थी।

कर्नल एस. ए. मलिक के नेतत्व में आई.एन.ए. की एक टुकड़ी भारतीय प्रदेि में पर्याप्त अंदर तक चली गई और उसने 14 अप्रैल 1944 को मणिपुर राज्य में मोरांग स्थान पर भारत का राष्ट्रीय तिरंगा लहरा दिया। इस प्रकार प्रतीक रूप में आई.एन.ए. ने भारत भूमि के एक भाग को अंग्रेजी ाासन से मुक्त करा लिया था। भारत भूमि के जिस स्थान पर आई. एन.ए. ने प्रथम बार तिरंगा लहराया था वहीं आजाद हिन्द फौज के ाहीद होने वाले सैनिकों की स्मति में एक स्मारक बनाकर अब उसे पावन स्थल का रूप दिया जा चुका है। नेताजी की काँसे की मूर्ति वहाँ लगाई गई व नेताजी का संग्रहालय भी बनाया गया। मोरांग भारत में आने वाली पीढ़ियों के लिए तीर्थ स्थल होगा, विोषतः उन व्यक्तियों के लिए जो भारत की स्वतंत्रता के द्वितीय संग्राम के सैनिकों को, जिन्होंने स्वतंत्रता की बलिवेदी पर अपना जीवन उत्सर्ग कर दिया था, श्रद्धा सुमन अर्पित करना चाहते हैं।

मुक्त क्षेत्रों के मनोनीत गवर्नर

जब भारत-बर्मा सीमा पर अग्रिम युद्ध क्षेत्र में आई.एन.ए. संघर्षरत थी तब पीछे अस्थायी सरकार को साधन-सम्पन्न करके सुदढ़ किया जा रहा था, जिससे कि वह भारत के स्वतंत्र हुए क्षेत्रों में प्रााासन एवं विस्थापितों को बसाने का कार्य जापानी सेना की सहायता से सम्पन्न कर सके। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि नेताजी ने जापानियों को यह स्पष्ट कर दिया था कि आई.एन.ए. के भारत में प्रवेि करने के पिचात् अस्थायी सरकार ही उच्चतम अधिकारी होगी और मुक्त क्षेत्र में उसी की आज्ञा से कार्य होंगे। इसी नीति के अनुरूप नेताजी ने आजाद हिन्द सरकार के नोट छपवाने का प्रबंध किया और डाक-टिकट भी तैयार करवाये। मेजर जनरल ए.सी. चटर्जी मुक्त क्षेत्र के प्रथम गवर्नर मनोनीत किए गए। जापानी नागरिक

एवं बैंक तथा कंपनियों सहित उनकी संस्थाएँ, जो मुक्त क्षेत्र में होंगी, गवर्नर के अधिकार में होंगी और वह बैंक आजाद हिन्द सरकार का अधिकृत बैंक होगा। जापानी बैंक तथा व्यापारिक संस्थान राष्ट्रीय बैंक के निर्दे ान तथा नियंत्रण में कार्य करेंगे।

युद्ध नीति पूर्णतया जापानियों के अधिकार में थी, क्योंकि वे इस युद्ध में वरिष्ठ भागीदार थे। उन्हीं के टैंक, हवाई जहाज, तोपखाना, राइफल एवं बारूद युद्ध में प्रयोग हो रहे थे। जापानी इस बात से खिन्न थे कि युद्ध-स्थल पर अपना उच्च स्थान होते हुए भी आई.एन.ए. के साथ भारत में प्रवे ा करने पर वे अस्थायी सरकार के अधीन होंगे। नेताजी अपने इस महत्त्वपूर्ण सिद्धांत पर दढ़ थे। अतः जापानियों को उनके इस निर्णय पर झुकना पड़ा। इसी सिद्धांत के अनुसार नेताजी ने जापानियों का यह प्रस्ताव कि भारत भूमि पर भारत-जापान, सहयोग समिति का अध्यक्ष जापानी हो, एकदम अस्वीकार कर दिया। उन्होंने दढ़ता से कहा कि या तो उस समिति का अध्यक्ष भारतीय होगा अथवा कोई अध्यक्ष नहीं होगा।

इस प्रकार जापानी सदैव यह ध्यान रखते थे कि भारत की प्रभुसत्ता, निष्ठा एवं स्वतंत्रता को प्रभावित करने वाले विषयों पर नेताजी के साथ उनकी स्थिति कहाँ है। नेताजी ने जापानियों से यह स्पष्ट कह दिया था कि अंग्रेजों की जगह जापानियों को अपना स्वामी बनाने की अपेक्षा वे भारत को अंग्रेजों की परतंत्रता में दो सौ वर्ष और रहना पसंद करेंगे।

हिकारी किकान (संपर्क कार्यालय) के प्रमुख जनरल इसोडा के साथ काफी खींचातानी के बाद नेताजी ने अंत में आई. एन. ए. के कार्यों की अर्थ-व्यवस्था के लिए आजाद हिन्द का राष्ट्रीय बैंक स्थापित करने की अनुमति जापानियों से प्राप्त कर ली। उन्होंने 5 अप्रैल 1944 को रंगून में बैंक खोला और उसी दिन रानी झांसी की रेजिमेंट के साथ युद्ध-स्थल की ओर प्रस्थान किया। लड़कियों में अपार उत्साह था और उन्हें इस बात का गर्व था कि वे आई.एन.ए. के पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर लड़ने के लिए युद्धस्थल की ओर जा

रही हैं। पुनर्निर्माण की दष्टि से आई.एन.ए. द्वारा मुक्त कराए गये क्षेत्रों में लोगों के पुनर्वास व नागरिक प्र ाासन की स्थापना के लिए मनोनीत गवर्नर पूर्णरूप से तैयार थे। उनके साथ आजाद हिंद दल के नागरिक प्र ाासन में पूर्णरूपेण प्रि ाक्षित सैनिक थे। इस दल में कृषक, बढ़ई, लुहार, पोस्टमैन, वायरलैस आपरेटर, ट्रक-चालक, सड़क-निर्माणकर्ता तथा अन्य कारीगर थे जो ध्वस्त ग्रामों एवं नगरों में पुनर्निर्माण का कार्य करने को तैयार थे एवं सामान्य नागरिक जीवन पुनः स्थापित करने के लिए प्रस्तुत थे।

नेताजी ने सैनिक कार्यवाही के प्रत्येक पहलू पर और विदे ाी ाासन से मुक्त होने पर ाीघ्रता से नागरिक प्र ाासन पुनः स्थापित करने पर विचार कर रखा था। उन्होंने छोटे से छोटे कार्य के लिए भी प्रि ाक्षित पुरुषों की नियुक्ति की थी जिससे परिवर्तन के समय अविलंब सामान्य जीवन बहाल किया जा सके एवं पुनर्निर्माण का कार्य तेजी से हो सके। आई.एन.ए. की जीत के परिणामस्वरूप उसके आगे बढ़ने पर ात्रु यदि पूर्ण विध्वंस की नीति अपनाकर प्रत्यावर्तन करते समय समस्त वस्तुओं को नष्ट कर भी दे, तो आजाद हिन्द दल तुरन्त कार्यरत होने के लिए तैयार रहे। नागरिक अभियंताओं द्वारा अस्थायी कुटिया बनाने की एवं यांत्रिक अभियंताओं द्वारा खाद्यान्न उगाने के लिए पानी के पंप लगाने की तथा विद्युत अभियंताओं द्वारा सड़कों पर प्रका ा करने की योजना भी तैयार थी। पीने का पानी समीप के कुओं एवं तालाबों से लाया जायेगा। आसपास के ग्राम अस्थायी सड़कों द्वारा मिलाये जायेंगे। मुक्त क्षेत्र में पोस्टमैन डाक एवं मनीआर्डर वितरित करेंगे। आजाद हिन्द बैंक मुक्त क्षेत्र के व्यक्तियों को उनकी आव यकताओं की पूर्ति हेतु पर्याप्त धन देगा। इन सभी व्यावहारिक पहलुओं की पूर्ण व्यवस्था की गई थी।

हिन्द क्रान्ति' से साभार

आर-4/17, राजनगर, गाजियाबाद (उ.प्र.)

'भारत माता के सम्मान के रक्षक ाहीद ऊधम सिंह'

–मनमोहन कुमार आर्य

अब से लगभग 5,151 वर्ष पूर्व महाभारत का युद्ध हुआ जिससे कल्पनातीत विना ा होने के कारण धार्मिक, राजनैतिक व सामाजिक सभी प्रकार की व्यवस्थायें समाप्त हो गई और दे ा में अन्ध–वि वास व कुरीतियों की वद्धि होती गई। यज्ञों में प ाुओं की बलि आरम्भ हो गई, स्त्री व ाूद्रों को वेदाध्ययन के अधिकारों से वंचित कर दिया गया। गुण–कर्म–स्वभाव पर आधारित वर्ण व्यवस्था जन्म पर आधारित हो गई। वैदिक ज्ञान–विज्ञान विस्मत कर दिया गया। इस काल में अनेक कारणों से बौद्ध व जैन मत अस्तित्व में आये। इनके आचार्यों की मत्यु के प चात् मूर्तिपूजा आरम्भ हुई। फिर फलित ज्योतिष भी यूनान से भारत में आ गया और इसने भारत के लोगों को भाग्यवादी बनाकर पुरुषार्थ व बलहीन बना डाला। इससे समाज कमजोर होता गया। तभी हम अपनी धार्मिक, राजनैतिक व सामाजिक कमजोरियों व मूर्खतापूर्ण निर्णयों के कारण मुगलों के गुलाम हो गये। उसके बाद ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने अपने बौद्धिक छल–कपट आदि के द्वारा प्रायः सारे भारत को अपने नियन्त्रण में ले लिया। गुलामी का दौर चला, दे ावासियों ने अमानवीय अत्याचारों को सहा। ऐसे समय में सन् 1863 में वैदिक ज्ञान–विज्ञान से सम्पन्न एक साहसी, वीर, ब्रह्मचर्य के बल से प्रदीप्त, अभूतपूर्व दे ाभक्त इतिहास–भूगोल के ज्ञान व विज्ञान से पूर्ण महर्षि दयानन्द का राष्ट्र के क्षितिज पर अवतरण हुआ। वे दे ावासियों में वैदिक धर्म के उदात्त विचारों, मान्याताओं व सिद्धान्तों का प्रचार तो करते ही थे साथ ही साथ दे ा की स्वतन्त्रता, स्वराज्य, आदि समयानुकूल विचारों का प्रचार करते हुए स्वतन्त्रता के मन्तव्य व विचार को भी जनता पर प्रकट कर उन्हें इसकी प्रप्ति के लिए तैयार करते रहे। यही कारण है कि महादेव गोविन्द रानाडे, उनके ि ाष्य गोपाल कृष्ण गोखले, गोखले जी के ि ाष्य गाँधीजी तथा दूसरे क्रान्तिकारी ि ाष्यों का उद्भव हुआ। उन दिनों एक तरफ आजादी की प्राप्ति के लिए प्रयत्न बढ़ रहे थे तो दूसरी ओर उसको दबाने व कुचलने के लिए ाासक क्रूर व क्रूरतम कार्य कर रहे थे। उसी का परिणाम था पंजाब के अमतसर में जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड। जहाँ बैसाखी (13 अप्रैल, 1919)

के दिन ाान्तिपूर्वक सभा कर रहे निहत्थे व ाान्त लोगों पर जनरल डायर द्वारा गोलियों की बौछार कर सैकड़ों लोगों को मौत के घाट उतर दिया गया और हजारों घायल हो गए। ऊधमसिंह इस सभा में सम्मिलित थे व इसके प्रत्यक्षद र्ाी थे। उस समय उनकी आयु 19 वर्ष 4 महीनों की थी। इस आमानुषिक, निर्दयतापूर्वक किये गये जनसंहार ने उनकी आत्मा को अन्दर तक हिला दिया। उस युवा बालक ने हृदय में यह संकल्प किया कि इस क्रूर कर्म के दोषी को सजा देनी है तभी वह भारत माता के ऋण से उऋण होंगे और उससे भविष्य में अन्य ाासकों को ऐसा दुस्साहस करने का साहस नहीं होगा। दिनांक 13 मार्च, 1940 को लन्दन के कैक्स्टन हाल में इस घटना के उत्तरदायी माइकेल ओडायर को अपनी पिस्तौल की गोलियों से धरा ाायी कर उन्होंने भारत माता पर कुदष्टि डालने वाले की आँखें सदा-सदा के लिए बन्द कर दीं। **26 दिसंबर** को भारत माता के इस वीर बाँके महापुरुष का जन्मदिवस है। इस अवसर पर उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है एवं उनके निर्भीक व साहसी जीवन पर एक दष्टि डाल लेना भी समीचीन है। यहाँ यह भी लिखना अनुपयुक्त न होगा कि जलियाँवाला बाग काण्ड की इस घटना के विरोध में काँग्रेस ने यहाँ 26 दिसम्बर, 1919 को अपना अधिवे ान किया जहाँ उसके स्वागताध्यक्ष का भार महर्षि दयानन्द के ि ाष्य स्वामी श्रद्धानन्द ने अपने ऊपर लिया। उन्होंने अपना स्वागत भाषण हिन्दी में पढ़कर कांग्रेस के मंच से एक नई परम्परा को जन्म दिया तथा साथ ही कांग्रेस के मंच से दलितोद्धार पर भी कांग्रेस इतिहास में प्रथमवार अपने मार्मिक विचार व्यक्त किए।

ाहीद उधमसिंह का जन्म दिनांक 26 दिसम्बर 1899 को पटियाला रियासत के सुनाम स्थान पर पिता टहल सिंह के यहाँ हुआ था। उनके पिता पास के एक रेलवे फाटक की चौकी 'उप्पल' पर चौकीदार-(वाचमैन) का काम करते थे। बचपन में इनका नाम ोरसिंह व इनके भाई का नाम मुक्तासिंह था। इनके 7 वर्ष का होने तक इनके माता-पिता दोनों का निधन हो गया। 24 अक्टूबर 1907 को यह अपने बड़े भाई के साथ अमतसर के खालसा अनाथालय में भर्ती हुए। यहाँ सिख धर्म में दीक्षित कर उन्हें और उनके भाई को क्रम ाः ऊधमसिंह व साधू सिंह नाम दिए गये। इसके 10 वर्ष

बाद भाई साधूसिंह दिवंगत हो गये। सन् 1918 में मैट्रिक पास कर इन्होंने अनाथालय छोड़ दिया। 13 अप्रैल 1919 को बैसाखी के दिन अमतसर के जलियाँवाला बाग में जो अमानवीय घटना घटित हुई, उस सभा में भी आप सम्मिलित थे। यहाँ हो रही ाान्तिपूर्ण सभा में रिजीनाल्ड एडवर्ड हैरी डायर के आदे ा से निहत्थे लोगों को गोलियों से भून दिया गया था। सैकड़ों लोग अपने जीवन से हाथ धो बैठे और बड़ी संख्या में लोग घायल भी हुए थे। बाग में एक कुँआ था, जो अब भी है, उसमें लोग अपनी जान बचाने को कूद पड़े परन्तु बड़ी संख्या में लोगों के उसमें कूदने से सभी एक दूसरे के नीचे दब कर मर गये। ऊधमसिंह ने घायल लोगों की सहायता की। उन्हें कुँए से बाहर निकालने में उसने सहारा दिया। इस न ांस काण्ड से दुःखी होकर उसने 20 वर्ष की आयु में ही इस आमानुषिक काण्ड के खलनायक को सजा देने का संकल्प लिया जो इसके 21 वर्षों बाद 13 मार्च, 1940 को पूरा किया। जलियाँवाला बाग की घटना के कुछ समय बाद वह अमेरिका चला गया। अन्याय के विरुद्ध युद्धरत बब्बर अकालियों की गतिविधियों से प्रभावित होकर वह सन् 1920 में भारत लौट आया। अमेरिका से छुपाकर वह एक पिस्तौल भारत लाया था। अमतसर में पुलिस द्वारा पकड़े जाने पर उसे जेल जाना पड़ा जहाँ से रिहा होकर सन् 1931 में वह अपने जन्म के गाँव सुनाम में आ गया। वहाँ पुलिस द्वारा पेर ाान करने पर वह फिर अमतसर आ गया और यहाँ दुकान खोल कर दुकानों के नामपट्ट लिखने व पेण्टर का काम किया। उसे अपना नाम बदलना उचित लगा तो वह राम मुहम्मद सिंह आजाद बन गया। ाहीद भगतसिंह उनकी पार्टी की दे ाभक्ति के कार्यों से बहुत प्रभावित हुए और उन्हें अपना गुरु तुल्य मानने लगे। वह महर्षि दयानन्द व आर्य समाज के अनुयायी ाहीद पं. रामप्रसाद बिस्मिल व उनके दे ाभक्ति के गीत, गानों, गजलों व तरानों आदि से भी प्रभावित हुए जो उनकी जुबान पर रहा करते थे। पं. रामप्रसाद बिस्मिल क्रान्तिकारियों के रहनुमा थे और भगतसिंह सहित सभी क्रान्तिकारी उनकी गजलों व गीतों को गाया व गुनगुनाया करते थे। उनकी काकोरी काण्ड व फाँसी की घटना दे ाभक्त युवकों के लिए अनन्य उदाहरण थी। यहाँ से वे क मीर जा कर रहे और उसके बाद इंग्लैण्ड चले गये। यहाँ आकर वे जलियाँवाला बाग काण्ड के अवसर पर लिये गये अपने संकल्प को पूरा करने के लिए अवसर की तला ा

में लगे रहे। उनका संकल्प पूरा होने का समय आ गया जब वह कैक्स्टन हाल में 13 मार्च, 1940 को ईस्ट इण्डिया एसोसिए ान द्वारा रायल सेन्ट्रल एिं ायन सोसायटी से सम्बन्धित बैठक में सायं 4:30 बजे जा पहुँचे। उन्होंने जेब से पिस्तौल निकाल कर पंजाब के भूतपूर्व गवर्नर माइकेल ओडायर पर 5-6 गोलियाँ बरसाईं और उसे सदा-सदा के लिए मौत की नींद सुला दिया। जलियाँवाला बाग काण्ड में जो लोग मरे थे वे निहत्थे व निर्दोष थे और अब जो व्यक्ति मरा वह उन सहस्राधिक लोगों की मत्यु का दोषी था। इस घटना से एक नया इतिहास निर्मित हुआ जिससे सरदार ऊधमसिंह सदा के लिए अमर हो गये। बताया जाता है कि ऊधमसिंह ने दो बार गोलियाँ चलाईं जिससे माईकेल ओडायर भूमि पर गिर पड़े और उनकी मत्यु हो गई। इस घटना में सभा की अध्यक्षता कर रहे भारत राज्य के सचिव मि. जेटलैण्ड घायल हो गए। इस घटना के बाद ऊधमसिंह ने घटना स्थल से भागने का कोई प्रयास नहीं किया। ओल्ड बैले के केन्द्रीय क्रिमिनल न्यायालय के न्यायाधी ा एटकिन्सन ने 4 जून 1940 को उन्हें मौत की सजा सुनाई। मात्र 1 अप्रैल 1940 से 4 जून 1940 तक इस मुकद्दमे का फैसला कर दिया गया। 31 जुलाई, 1940 के दिन ऊधमसिंह ने लन्दन की पेनटेउविले जेल में फाँसी पर झूलकर अपना प्राणोत्सर्ग किया और भारतमाता के वीर अमर पुत्र बन गये। कारावास के दिनों में श्री ि ाव सिंह जौहल को लिखे उनके पत्रों से पता चलता है कि वह बहुत साहसी तथा हाजिरजवाब व्यक्ति थे। लन्दन में वह स्वयं को राजा जार्ज का मेहमान कहते थे। उनका मानना था कि मत्यु एक दुल्हन है जिससे उनका विवाह हो रहा है। फाँसी के फन्दे तक वह प्रसन्न मुद्रा में पहुँचें जिस प्रकार से पं. राम प्रसाद बिस्मिल और भगतसिंह आदि ाहीद पहुँचे थे। अपने मुकद्दमे की सुनवाई के दिनों में उन्होंने इच्छा व्यक्त की थी कि उनके अव ोष भारत भेज दिये जायें जिसे स्वीकार नहीं किया गया। सन् 1975 में पंजाब सरकार की प्रेरणा पर भारत सरकार ने ब्रिटि ा सरकार से इसके लिए अनुरोध किया जिससे उनकी अस्थियाँ व अव ोष दे ा में पहुँचे जिन्हें दे ा के लाखों लोगों ने अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि भेंट की।

196, चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001,
दूरभाषः 09412985121

No One Dies

-Jaya Row

The word Karma comes from the Sanskrit verb Kri, to do. Karma or action is the pivot around which life revolves. Action comes from desire, desire from thought, and thought from Vasana. Vasana is the inborn urge, deep-rooted inclination, inherent tendency. When you have a Vasana for music, the thought for music arises in your intellect. This thought crystallises as a desire in the mind to sing or listen to music. The desire then manifests as action. The action further creates an imprint, groove, Vasana for music.

The Power To Choose

Sometimes, you are conscious of the imprinting process. Most times, you are not. As your Vasana, so will be your thought, desire and action. Your Vasana then creates the environment or circumstance. Thus, you are a victim of your Vasanas in the present. This is called destiny.

All other species have to act in line with their Vasana. The human being alone is gifted with the choice of action. You can choose to act as per your Vasanas or be independent of them. With this Purushartha or choice, you determine your future. Prarabdha or destiny is the sum total of all your past Purusharthas. It is irrevocable. So if you look at your past, you are a victim. With reference to the future, you are a victor. At each juncture, your are free to choose the way you think, desire or act. Once chosen, you are a victim of its effect. The universe gives back what you have given to it. So be very careful how you think.

Think a positive, loving, elevating thought. That instant you have become a little more divine. The effect of it comes to you by way of good fortune, happiness and spiritual growth. You meet with serendipitous experiences. Spiritual Life is not about relocating to an Ashram or a hermitage. It is about changing your thoughts, attitudes and feelings. This is far more difficult than a mere shift of address. So Purushartha or free will is the key to your emancipation. Irrespective of your past, you can choose to be better, nobler, more evolved. God is only the facilitator and enabler of your actions. God has set the Law of Karma in place. It is up to you to use the law for your evolution.

During your life, every movement is determined by desire. At death, all the desires and aspirations of a person seem to disappear into thin air. Ancient seers deduced that the inner personality of a person doe not die. It just moves from one physical body to another. The movement of the mind, intellect and

Vasanas from one body to another is called the death of the former body and birth of the latter.

Why does this movement take place? Just as a person discards old clothes to don new ones, a person discards a body and environment that is no longer conducive for the fulfilment of his desires and moves to another body and atmosphere that fits the bill. Thus, death is a blessing. It allows you to start afresh on your journey to enlightenment.

Starting Afresh

The sum total of all your Vasanas is called Sanchita Vasanas. Of these a few powerful desires exert pressure for fulfilment. They are referred to as Prarabdha Vasanas. They determine your birth in an environment that is tailor-made for their exhaustion. Once they are fulfilled, the next batch of desires starts playing up. But they have no avenue for fulfilment. When there is a mismatch between your desires and the environment, nature blesses you with death. This cycle of birth and death goes on endlessly as long as one has desires.

During your lifetime, your Prarabdha Vasanas will be fulfilled irrespective of what you do. However, you also have the option of changing your Sanchita Vasanas. You can add to them, subtract from them, or even eliminate them.

As long as you perform desire -driven actions, you will be bound to the world. Many people, in the name of religion or spirituality, perform noble actions that acquire Punya or merit but are still driven by desire. They are transported to a super human state called heaven to enjoy the fruits of their Punya but return to the world because they still have desires. Those who perform negative, hateful actions go to hell where they suffer the effects of their Paapa or demerit and return to the world. Heaven and hell are not geographical locations, but states of mind.

Staying Focused

There are some who remain focused on spiritual noble actions. Such people inadvertently acquire Punya and have to go to heaven to exhaust their Punya before moving on to realisation. This is called Karma Mukti or liberation in stages. The wise understand the pitfalls of even good desires which only delay their progress to enlightenment. They perform Vasana-reducing, self purifying actions that give them realisation here and now. This is referred to as Kaivalya Mukti or direct liberation.

You are born in the world only to reach enlightenment and you do everything except strive for it. Wake up to your potential. Strive for it. Don't stop till the goal is reached.

INTERNATIONAL ARYA MAHASAMMELAN-2014 WAS HELD IN SINGAPORE ON 1ST-2ND NOVEMBER,2014 and hosted by the Aryasamaj, Singapore. The theme was "**VEDAS for PEACE**" On Ist of November,the programme started at the premises of Aryasamaj with Yoga session by Sw.Devvratji followed by a discourse on meditation by Ach.Gyaneshwarji and he stated that during the course of performing our daily routines, we should always be mindful of presence of God all around us and be ever in thankful mode to HIM for the bounties showered on us. Most precious thing given by God to us is Buddhi(intellect) and by exercising control over our mind and after knowing about the potential of our Aatma(soul) we can assume to have acquired 1/2 moksha. Practical meditation was also conducted. The inaugural function of the Sammelan was held in an open field under Tents after Yajna and hoisting of the flags of Singapore and the Aryasamaj.The guest of honour was Shri Inderjit Singh,M.P.and this session was conducted by Shri Om Prakash Rai, President of the Singapore Aryasamaj. While tracing the history of Singapore Aryasamaj, he stated that In 1914, it started under the name "The Young Men's Aryasamaj" but it was officially registered in 1927(founded by Dr.Bhagat Ram Sehgal whose daughter Ms. Adarsh Sareen presently happens to be an active member of C-3 Janakpuri Aryasamaj)) and its present three-storey building on Syed Alwi Road was inaugurated on 26th January,1963. At present It is also running a DAV Hindi School with 9 centres and has 120 teachers and 3300 students. After lunch,there were talks by Ach.Prabha Mitra,Shri Balchand Tanakoor(Mauritius), Dr.Satyakam Vedalankar,Dr.Satish Prakash,Dr.Sanat Kumar and Dr.Satyapal Singh.The talks were illuminating and the role of Vedas for world peace was highlighted. Dr.Sanat Kumar(Ajmer) informed about the project to teach Atharva Veda on line from 17th September,2015 bringing the Vedas even within the reach of a Smartphone user.Dr.Rajesh Rai talked about the history of Indians in Singapore and mentioned about the visits of Pt. Jawaharlal Nehru in1937to gain support for the Indian nationalist movement and Shri Atal Behari Bajpai in 1979 as foreign minister of India. Sw.Ritaspatiji (Hoshangabad)

emphasized on the importance of gurukuls.Dr.Somdev Shastri and Brahm.Nand Kishore's talk was about history of Aryasamaj. On second day, topics covered Empowerment of women in Vedas and Vedas' message for the society. In the concluding session, Shri Vinay Arya spoke about the project for propagation of the message of Aryasamaj by founding a huge central hub in Uttarakhand for which land has since been acquired and seed money donated by Shri Dharmpal Arya. This centre will cater to all the queries about Aryasamaj and prepare pracharaks,purohits, bhajneeks,house archives/ records,reference library and undertake all tasks to facilitate translation of Vedas and Vedic literature in various languages to assist aryasamajs on international pedestal. Delhi Aryapatinidhi Sabha has presently a website www.thearyasamaj .org where about 64 vedic periodicals can be seen beside other information and activities of the Aryasamaj.

There were 300 delegates from India,100 from Maritius and delegates from U.S.A, London,Australia,Canada also participated. A participant from Indonesia Ms.Anjana Gupta pledged that she will establish an Aryasamaj in Indonesia and her resolve received a big applause.

General:*The tour undertaken by some delegates started from 28th October which included Cruise tour by the Superstar Gemini vessel where we spent two nights and it was a wonderful experience. On 30th October we got an opportunity to visit the city MALACCA(Malaysia)by a tourist bus. It has Famosa fortess as an evidence of its occupation of Portuguese hundreds of years ago built in 1511. St.Paul's church was built in 1521 and Christ church in 1753. After cruise trip, we returned to Singapore on 31st October and visited Night Safari.On 3th November,we spent full day at Universal Studio enjoying* various *shows/rides and on 4th Nov.we visited Jurong Bird Park,went to Sentosa island,Visited Under water world,a Dolphin show and a laser-show "Wings of Time". Singapore was a disciplined city , neat and tidy, with 18 million trees three times its population,we had a city tour of Singapore with Flyer. On 5th we boarded flight for Bangkok and proceeded to Pattaya by bus.*

-B.D. Ukhul

SELECT PICTURES OF THE SAMMELAN

Date of Pubn. : 31.12.2014 Posted at - NIE - H.O. Postal Date : 2-3 Jan.2015
RNI Reg. No. DELBIL/2007/22062 Postal Regd. No. DL(W) 10/2143/2014-2016

इषे पिन्वस्व! ऊर्जे पिन्वस्व। ब्रह्मणे पिन्वस्व। क्षत्राय पिन्वस्व। द्यावापथिवीभ्यां पिन्वस्व। धर्मासि सुधर्म। अमेन्यस्मे नम्णानि धारय ब्रह्म धारय क्षत्रं धारय वि ां धारय।। यजु. 38/14।।

ऋषि-दीर्घतमाः, देवता-द्यावापथिवी, छन्द-अति ाक्वरी

अर्थ- हे धर्म ील प्रभो! आप (धर्म) सत्य के धारक और (अमेनि) वैर रहित हो। कृपया आप हमारे (नग्णानि) धनों को धारण करो। ब्रह्म तेज को, क्षात्र ाक्ति को और (वि ां) वाणिज्य बुद्धि को धारण करो। हे सब सुखों के दाता प्रभो! हमें (इषे) अन्न के लिए (पिन्वस्व) पुष्ट करो, हमें (अर्जे) पराक्रम के लिए पुष्ट करो। हमें वेद ज्ञान के लिए समर्थ बनाओ। हमें चक्रवर्ती राज्य के लिए समर्थ बनाओ। हमें (द्यावापथिवीभ्यां) पारलौकिक और इहलोक के सुख के लिए (मोक्ष के आनन्द के लिए) समर्थ करो।

Oh Most Righteous God! You are the Holder of Truth and are bereft of animosity. Kindly bestow upon us riches. May by Your grace there remain in our body-politics men of learning and good administration and also men of business acumen. Oh Gracious God, kindly nourish us with food. Kindly strenghen us so that we may do deeds of valour. Graciously equip us with requisite clarity of thought. Please stimulate us with necessary courage. Vouchsafe us the ability to earn and enjoy worldly happiness and to have the foretaste of Supreme Bliss.

Printed by - Friendsprintofast, New Delhi-58